उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005
Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांक:1222 / एनआरएम / डब्लूबीएसएलएएजी / पीएल / 2021 दिनॉक: 12.12.2024

दिनांक	:	12 दिसम्बर, 2024
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की बीसवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉं

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024–25 की बीसवीं बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 12 दिसम्बर, 2024 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के राईस ब्रीडर व मौसम वैज्ञानिक ; चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक; उद्यान विभाग; पशुपालन विभाग; रेशम विभाग; गन्ना विभाग तथा यू.पी. डास्प के डिजिटल डेवलपमेंट एक्सपर्ट; उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी, शुआट्स, प्रयागराज; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के वैज्ञानिकों ने ऑनलाइन प्रतिभाग किया।

आगामी सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (13 दिसम्बर से 19 दिसम्बर, 2024)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह (13 दिसम्बर से 19 दिसम्बर, 2024) के दौरान प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से कम रहने की संभावना है। प्रदेश के भांभर–तराई क्षेत्र में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस; भांभर–तराई क्षेत्र के शेष भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं मध्य–पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा बुंदेलखण्ड के दक्षिणी भाग दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 24 से 26 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

इस दौरान प्रदेश के समस्त जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से प्रभावी रूप से कम रहने की संभावना है। प्रदेश के भांभर–तराई, पश्चिमी मैदानी एवं दक्षिणी पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग तथा बुंदेलखण्ड एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 4 से 6 डिग्री सेल्सियस; जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 6 से 8 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। प्रदेश के समस्त जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम आर्द्रता 75 से 85 प्रतिशत तथा औसत साप्ताहिक न्यूनतम आर्द्रता 50 से 60 प्रतिशत रहने की संभावना है।

इस सप्ताह के आरंभिक चरण में उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र, तराई क्षेत्र के आस–पास पाला व शीतलहर की संभावना है जबकि पूर्वी–मैदानी क्षेत्र, दक्षिणी–पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं बुंदेलखण्ड में शीतलहर की संभावना है।

आगामी द्वितीय सप्ताह के मौसम का दृष्टिकोण (20 से 26 दिसम्बर, 2024)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह (20 से 26 दिसम्बर, 2024) के दौरान प्रदेश के भांभर-तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से कम जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से कम रहने की संभावना है। प्रदेश के भांभर-तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 19 से 21 डिग्री सेल्सियस; भांभर-तराई क्षेत्र के शेष भाग, पश्चिमी मैदानी मध्य पश्चिमी मैदानी एवं दक्षिणी पश्चिमी एवं अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 21 से 23 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में 23 से 25 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

प्रदेश के विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं बुंदलेखण्ड के पूर्वी एवं दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से कम जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में सामान्य के आस-पास या सामान्य से आंशिक रूप कम रहने की संभावना है। प्रदेश के भांभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग, पश्चिमी मैदानी, दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 3 से 6 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 6 से 8 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। इस दौरान प्रदेश के समस्त जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम आर्द्रता 70 से 80 प्रतिशत तथा औसत साप्ताहिक न्यूनतम आर्द्रता 45 से 55 प्रतिशत रहने की संभावना है।

कृषि विभाग, उ.प्र. द्वारा दिनांक 09 दिसम्बर, 2024 तक उपलब्ध कराये गये आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में कुल रबी की बुवाई का लक्ष्य 135.87 लाख हे. के सापेक्ष कुल रबी फसलों की बुवाई 114.85 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 84.53 प्रतिशत है गेहूँ के आच्छादन लक्ष्य 101.12 लाख हे. के सापेक्ष 80.92 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 80.02 प्रतिशत है। जौ के आच्छादन लक्ष्य 1.74 लाख हे. के सापेक्ष 1.65 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 95.01 प्रतिशत है। मक्का के आच्छादन लक्ष्य 0.58 लाख के सापेक्ष 0.27 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 47.40 प्रतिशत है। चना के लक्ष्य 7.28 लाख हे. के सापेक्ष 7.18 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 98.61 प्रतिशत है। मटर के लक्ष्य 5.02 लाख हे. के सापेक्ष 4.75 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 94.63 प्रतिशत है। मसूर के लक्ष्य 5.98 लाख हे. के सापेक्ष 5.84 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 97.74 प्रतिशत है। तिलहनी फसलों में तोरिया की बुवाई लक्ष्य 4.67 लाख हे. के सापेक्ष 4.68 लाख हे. में बुवाई हुई है जो लक्ष्य का 100.13 प्रतिशत है जबकि राई-सरसों के 13.47 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 13.55 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 100.62 प्रतिशत है। अलसी के 0.68 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 0.68 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 98.82 प्रतिशत है।

मौसम के परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- वर्तमान में गेहूं की केवल देर से बोये जाने वाली प्रजातियों का समय है अतः बुवाई हेतु विलम्ब से बोई जाने वाली संस्तुत प्रजातियों का ही चयन करें। गेहूं की बुवाई के समय उर्वरक सही गहराई में डालने तथा कम व्यय में कतार में बुवाई के लिये जीरोटिल फर्टीड्रिल का प्रयोग करें।
- अधिक ठंड या पाला से फसलों को बचाने हेतु यदि संभव हो तो खेतों में नमी (सतही सिंचाई) बनाये रखें।
- वर्तमान में मौसम आलू की फसल के लिये अनुकूल है किंतु पाला पड़ने की स्थिति में झुलसा बीमारी की रोकथाम हेतु मैंकोजेब/प्रोपीनेब/कार्बेन्डाजिम फफूदनाशक 2.0 से 2.5 कि.ग्रा. 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। जिन खेतों में बीमारी का प्रकोप हो चुका है उनमें किसी भी फफूदनाशक साईमोक्सेनिल+मैंकोजेब अथवा मेटालेक्जिल + मैंकोजेब का 2.0 से 2.5 प्रति हे. (1000 लीटर पानी) की दर से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

गेहूँ की खेती

- गेहूँ की विलंब से बोई जाने वाली संस्तुत किस्मों यथा के.-9423 (उन्नत हलना), के.-7903 (हलना), एच.आई.1563, डी.बी.डब्लू.-107, एच.डी.-3118, एच.आई.1621, पी.बी.डब्लू.-833, पी.बी.डब्लू. -771 एवं एच.डी.-3059, एच.डी.-3271 आदि के बीज की बुवाई दिसम्बर तक पूर्ण करें।
- प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र के लिये संस्तुत किस्मों जैसे के.-1616, के.-1317, डी.एल.-803-3, राज-1555, एच.आई.-8381, एच.आई.-8498, के.-9107, डब्लू.एच.-147, जी.डब्लू.-273, जी. डब्लू.-322, एच.डी.-3237, एच.डी.-3365 की बुवाई करें।
- दिसम्बर में गेहूँ की बुवाई करने पर गेहूँ की बीजदर सामान्य से 25 प्रतिशत (125 कि.ग्रा./हे.) बढ़ाकर बुवाई करें तथा विलम्ब से ही बोई जाने वाली प्रजातियों का चयन करें।
- असिंचित क्षेत्रों में बोए गए गेहूँ की फसल गोभ अवस्था में है, अतः नत्रजन की संस्तुत मात्रा की एक चौथाई मात्रा की टॉप ड्रेसिंग करें।
- गेहूँ की बुवाई के 20-25 दिन बाद पहली हल्की सिंचाई (ताजमूल अवस्था में) अवश्य करें।
- ऊसर क्षेत्रों में गेहू की बुवाई के 28-30 दिन बाद पहली सिंचाई करें तथा शेष सिंचाइयां हल्की व जल्दी जल्दी करें।
- हल्की भूमियों में प्रथम सिंचाई के बाद ओट आने पर तथा भारी भूमियों में सिंचाई से पूर्व नत्रजन की शेष मात्रा की आधी मात्रा की टॉपड्रेसिंग करें।
- गेहूँ की बुवाई के 20-30 दिन के मध्य पहली सिंचाई के आस-पास पौधों में जिंक की कमी के लक्षण प्रकट होते है। लक्षण दिखाई देने पर 5 किग्रा. जिंक सल्फेट तथा 16 किग्रा. यूरिया को 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़कें। यूरिया के स्थान पर 2.5 किग्रा. बुझे हुए चूने के पानी (2.5 किग्रा. बुझे चूने को 10 लीटर पानी में सायंकाल भिगोकर दूसरे दिन पानी निथार कर पानी) का प्रयोग करें।
- गेहूँसा एवं जंगली जई आदि संकरी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिये खरपतवारनाशी सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिशत डब्लू.जी. की 33 ग्राम (2.5 यूनिट) को 300 लीटर पानी में घोल बनाकर अथवा आइसोप्रोट्यूरॉन 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 1.25 किलोग्राम प्रति हे. 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के 30-35 दिन बाद छिड़काव करें।
- चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार के नियंत्रण के लिये 2-4डी, सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत की 625 ग्राम प्रति हे. अथवा 2-4डी मिथाइल एमाइन साल्ट 58 प्रतिशत एस.एल. की 1.25 लीटर प्रति हे. की मात्रा को लगभग 500 से 600 पानी में घोल बनाकर बुवाई के 30 से 35 दिन बाद छिड़काव करना चाहिये।
- सकरी एवं चौड़ी पत्ती दोनों खरपतवारों के नियंत्रण हेतु सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिशत+मेटासल्फ्यूरॉन मेथाइल 5 प्रतिशत डब्लू.जी. 40 ग्राम (2.5 यूनिट) अथवा मेट्रीब्यूजिन 70 प्रतिशत डब्लू.पी. की 250 से 300 ग्राम मात्रा को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से फ्लैटफैननॉजिल से प्रथम सिंचाई के बाद 25 से 30 दिन की अवस्था पर छिड़काव करें।

रबी मक्का की खेती

- जिन कृषकों के खेत अभी खाली हुये हैं वह अभी भी मक्के की बुवाई कर सकते हैं तथा साथ में उपयुक्त अंतःफसल की बुवाई कर सकते हैं।
- रबी मक्का की बुवाई के 20 से 25 एवं 40 से 45 दिन बाद निराई गुड़ाई करें अथवा एट्राजीन 50 प्रतिशत डब्लू.पी. 1 से 1.5 कि.ग्रा. मात्रा 500 से 600 ली. पानी में घोलकर बुवाई के बाद तथा जमाव से पहले छिड़काव करें।
- रबी मक्का की बुवाई के 25 से 30 दिन उपरांत प्रथम सिंचाई करें।

तिलहनी फसलों की खेती

- राई/सरसों में विरलीकरण करके पौधे से पौधे की दूरी 25 से 30 से.मी. व लाइन से लाइन 40 से 45 से.मी. करें। बची हुई नत्रजन की टॉपड्रेसिंग करें।
- नमी कम होने पर हल्की सिंचाई करें।
- राई/सरसों के प्रमुख कीट माहू तथा चित्रित बग के नियंत्रण हेतु डाईमेथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. 1.0 ली. अथवा डाईक्लोरोवॉस 76 प्रतिशत ई.सी. 500 मि.ली. अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस. एल., 250 मि.ली. मात्रा को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।
- लीफ माइनर (पत्ती सुरगंक कीट) के नियंत्रण हेतु डाईमेथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. अथवा क्लोरपाईरीफॉस 20 प्रतिशत ई.सी. की 1 लीटर मात्रा प्रति हे. की दर से 600 से 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

दलहनी फसलों की खेती

- चने में कटवर्म (कटुआ कीट) के नियंत्रण हेतु क्लोरपाईरीफॉस 20 प्रतिशत ई.सी. की 2.5 लीटर मात्रा को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करना चाहिये।
- सेमीलूपर कीट के नियंत्रण हेतु मेटाराइजियम 10 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर अथवा बेसिलस थूरिनजिएंसिस (बी.टी.) की 1 कि.ग्रा. मात्रा अथवा एन.पी.वी. (एच.) 2 प्रतिशत ए.एस. 250-300 मि.ली. मात्रा अथवा क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई.सी., 2 लीटर मात्रा को 500-600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।
- मटर में फैले बुकनी रोग (पाउडरी मिल्डयू) की रोकथाम के लिये घुलनशील गंधक 80 प्रतिशत 2 किग्रा. अथवा ट्राईडेमोफॉन 25 प्रतिशत डबलू.पी. 250 ग्राम/हे.लगभग 500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

गन्ना की खेती

- दूसरी या तीसरी पेड़ी में गोबर की खाद/प्रेसमड डालें तथा फुटाव न होने की स्थिति में इथ्रेल 100 पी.पी.एम. का छिड़काव करें।
- पराली बिल्कुल न जलायें। पराली को गन्ने में मल्च के रूप में खेतों में प्रयोग करें।
- शरदकालीन गन्ने के साथ अंतःफसली खेती की समय समय पर निराई-गुड़ाई एवं सिंचाई अवश्य करें।
- लालसड़न रोग से प्रभावित खेत में गन्ने की कटाई के पश्चात् किसी अन्य फसल की बुवाई करें।
- शरदकालीन गन्ने के जमाव के पश्चात् आवश्यकतानुसार सिंचाई कर दें।
- चीनी मिलों में गन्ना आपूर्ति करते समय गन्ने की कटाई जमीन की सतह से करें।
- गन्ने की कटाई तभी करें जब सप्लाई टिकट का एस.एम.एस. आपके मोबाईल पर आ जाय।
- स्वच्छ एवं ताजे गन्ने की सप्लाई करें, जिससे आपको गन्ने का सही वजन प्राप्त हो।

सब्जियों की खेती

- कीट प्रबंधन के लिये गोभीवर्गीय फसलों में फूल बनने की अवस्था के समय नीम सीड कर्नल एक्सट्रैक्ट 5 मि.ली./10 लीटर पानी में मिलाकर 10 से 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।
- गोभीवर्गीय फसलों में डायमंड ब्लैक मॉथ का प्रकोप होने पर क्लोरेन्टरानिलिप्रोल 0.5 से 1.0 मि.ली. रसायन प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- टमाटर तथा मिर्च की फसल को झुलसा रोग से बचाव हेतु 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम/ली.) की दर से मैकोजेब का छिड़काव करें। फसलों को कीटों से बचाव हेतु ब्यूवेरिया वेसियाना (फफूंद) 3 से 5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर कीटनाशकों का प्रयोग करें।

- बैंगन की फसल में प्ररोह एवं फलछेदक कीट की रोकथाम के लिये ब्यूवेरिया वेसियाना (फफूंद) 3 से 5 ग्राम या फ्लूबेन्डामाइड 0.5 से 0.75 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- लहसुन में 200 कि.ग्रा. कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट या 100 कि.ग्रा. यूरिया/हे. की दर से टापड्रेसिंग करें ध्यान रहे कि यूरिया का प्रयोग सिंचाई के बाद करें जबकि कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट का प्रयोग करने के बाद सिंचाई करें।
- सब्जियों में विशेषतया मिर्च, टमाटर फसल में विषाणु रोग का प्रकोप अधिक हो रहा है इसका फैलाव सफेद मक्खी/हॉपर कीट के द्वारा होता है। इसके फैलाव के रोकथाम हेतु डाईमेथोएट अथवा इमिडाक्लोप्रिड 1 मि.ली./लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

बागवानी की खेती

- केले के पौधे को पाले से बचाने के लिये मृदा में पर्याप्त नमी बनाये रखें तथा बांस एवं रस्सी की सहायता से पौधों को सहारा दें। जिससे पौधे न गिरे एवं केले के पौधें के चारों ओर 2 से 3 महीने में एक बार मिट्टी अवश्य चढ़ायें।
- आम/लीची में गुजिया कीट (मिलीबग) को पौधों पर चढ़ने से रोकने के लिए भूमि से लगभग 40 से. मी. ऊपर पेड़ के तने के चारों तरफ मिट्टी की पतली परत चढ़ाकर 400 गेज की मोटी सफेद पालीथीन की 25 से.मी. चौड़ी पट्टी लपेट कर सुतली से बांध दें। यदि गुजिया कीट की संख्या अधिक हो तो प्रत्येक पेड़ में क्लोरपाइरीफॉस (1.5 प्रतिशत) 250 ग्रा. की दर से तने के चारों ओर गुड़ाई करके मिट्टी में मिलाने से गुजिया कीट का नियंत्रण किया जा सकता है।
- गुलाब की बडिंग का कार्य, सिंचाई, निराई, सफाई करें एवं पत्तियों में ब्लैक लीफ स्पॉट रोग जिसमें पत्तियां झुलसी हुई प्रतीत हो उन पर कार्बेन्डाजिम 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 8 से 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- ग्लैडियोलस में सिंचाई, निराई, गुड़ाई करें तथा मुरझाई हुई टहनियों को निकालते रहे एवं फूल खिलने के बाद डंठलों की कटाई छटाई करें।
- दिसम्बर से जनवरी माह में अनुपादक बागों पर जीर्णोउद्धार अर्न्तगत विकारयुक्त एवं घनी शाखाओं की कटाई छटाई करें तथा छटे/कटे भाग पर कॉपर आक्सीक्लोराईड का लेप लगायें।

मशरूम की खेती

- मशरूम उत्पादन हेतु कृषक जिला उद्यान अधिकारी, अधीक्षक राजकीय उद्यान, राजकीय मशरूम प्रशिक्षण केन्द्र, अलीगंज, लखनऊ, औद्यानिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण केन्द्र, बस्ती एवं कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि विश्वविद्यालयों से सम्पर्क कर सकते हैं।
- मशरूम की खेती के कक्ष में आर्द्रता 85 प्रतिशत एवं तापमान 18 से 20 डिग्री से. तक रखें।
- मशरूम की खेती में कई प्रकार के कीट एवं बीमारियां लगती हैं, इनमें से प्रमुख कवक एवं जीवाणु जनित बीमारियों के लक्षण बैग की सतह पर भूरे, हरे और पीले धब्बों के रूप में दिखाई देते है। इसके प्रबंधन के लिये 2 एम.एल. फॉर्मेलिन को 1 लीटर पानी के साथ घोल बनाकर, रूई को घोल में भिगोकर प्रभावित स्थानों पर लगायें।

पशुपालन

- वर्तमान मौसम में ब्याने वाले पशुओं का विशेष ध्यान रखें एवं साथ ही पशुओं को शीतलहरी से बचायें एवं टीन शेड के खुले स्थानों के चारों तरफ बोरा या तिरपाल टांगे।
- पशुओं को बच्चे पैदा होते ही बच्चे की नाल को 1.5 से 2 इंच पर धागे से बांधकर नये ब्लेड से काटकर टिंचर आयोडीन का उपयोग करें।

- पशुओं को अंतः कृमिनाशक एवं बाह्य परजीवीनाशक दवाई पशुचिकित्सक की सलाह से आवश्यकता पड़ने पर उपयोग करें।
- पं.दीन दयाल उपाध्याय मेले का आयोजन दिसम्बर माह में भी किया जा रहा है, जिसमें निशुल्क चिकित्सा, दवापान एवं गोष्ठियों का भी आयोजन किया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी से सम्पर्क कर उठा सकते हैं।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं.-1962 पर सम्पर्क पर योजना का लाभ ले सकते हैं।

मत्स्य पालन

- तालाब में ठंड के मौसम में प्राकृतिक भोजन (प्लैंकटॉन) की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु प्रति सप्ताह प्रति एकड़ की दर से 25 किलोग्राम सरसों की खली, 5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट, 2 किलोग्राम सूक्ष्म खनिज तत्व (मिनरल मिक्चर) पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- कार्प मछली वाले तालाब में ठंड के मौसम में 15 दिनों के अन्तराल पर जाल चलायें ।
- बदलते मौसम में फफूँद एवं परजीवी संक्रमण से मछली को बचाने हेतु 40-50 किलोग्राम/एकड़ की दर से नमक का छिड़काव करें एवं भोजन के साथ भी 5 से 6 ग्राम/किलोग्राम भोजन के हिसाब से माह में 7 से 10 दिनों तक मछलियों को खिलाएँ।
- मछलियों को संक्रमण से बचाव के लिए प्रति एकड़ 500 ग्राम पोटाशियम परमैंगनेट या 500 एम.एल. की दर से वाटर सेनिटाईजर (सोक्रिना डब्लू. एस., पोटाशियम परमेग्नेट, सेनिपॉण्ड, सीफैक्स, क्यू फॉर ऑल, रेसिमैक्स इत्यादि) का प्रयोग करें।
- माह में एक बार 400 किलोग्राम गोबर/एकड़ की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- तापमान अधिक गिरने (15 डिग्री सेल्सियस) एवं कोहरे की स्थिति में तालाब में किसी तरह का क्रिया-कलाप यानि भोजन, चूना, खाद, गोबर इत्यादि का प्रयोग बंद कर देना चाहिए।
- कार्प मछली वाले तालाब में न्यूनतम पानी का स्तर 5 फीट बनायें रखें।
- पंगेशियस मछली वाले तालाब में न्यूनतम पानी का स्तर 8-10 फीट बनायें रखें।

रेशम पालन

- शहतूती उद्यानों एवं निजी क्षेत्रों में शहतूत पौधों की समय से प्रूनिंग एवं ट्रिमिंग का कार्य कराते हुये शहतूत नर्सरी लगाये जाने हेतु आवश्यक तैयारियां पूर्ण करते हुये लक्ष्य अनुसार शहतूत नर्सरी पौध तैयार करा ली जाय।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 26 दिसम्बर, 2024 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट **upcar.up.gov.in** पर भी उपलब्ध हैं।

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट **www.kisanmitraup.ai** पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हो तो परिषद के ईमेल **upcar12@gmail.com** पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

(संजय सिंह) 12/11/24
महानिदेशक

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
43. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
44. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
45. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
46. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
47. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
48. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

12-12-24

(विनोद कुमार तिवारी)
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2024-25 की बीसवीं बैठक दिनांक 12 दिसम्बर, 2024 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
2. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ।
3. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
4. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ (ऑनलाइन)।
5. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
6. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल आफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना नैनी एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट, शुआट्स, प्रयागराज (ऑनलाइन)।
7. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश
   डा. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र, पशुपालन, उ.प्र.
8. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
9. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
10. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
11. श्री आशुतोष, रेशम विकास अधिकारी, रेशम, उत्तर प्रदेश।
12. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
13. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ (ऑनलाइन)।
14. डा. अनसुमान सिंह, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
15. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आबजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
16. श्री कुंदन सिंह, पादप रक्षा विभाग, कृषि विभाग, लखनऊ।
17. सुश्री राज्यश्री सिंह, डिजिटल डेवलपमेंट एक्सपर्ट, यू.पी. डास्प, पिकप भवन, गोमतीनगर।
18. श्री नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।
19. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।